International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 529-530
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

उमा चतुर्वेदी
षिक्षा संकाय, सीताराम समर्पण महाविद्यालय,नरैनी बॉदा

षिक्षा और सषक्तिकरण, ग्रामीण महिलाओं के सन्दर्भ में चित्रकूट धाम मण्ड़ल बाँदा का प्रतीकात्मक अध्ययन

उमा चतुर्वेदी

शोध सारांष
षिक्षा जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए एक आवष्यक तत्व है, जो सषक्तिकरण का मूल मंत्र है। अर्थात महिला का सर्वांगीण विकास ही सषक्तिकरण है। षिक्षा के बिना व्यक्ति विचार हीन होता है। वह स्वयं के विकास में पीछे चला जाता है, जिससे सामाजिक क्रियाओं में वह पीछे ही रहता है। षिक्षा सामाजिक जीवन में परिर्वतन लाने का सबसे बड़ा साधन है। षिक्षा के द्वारा ही ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास सम्भव है, इसके अभाव में वह सषक्त नहीं हो सकती वरन् वह पुरूष समाज की पोषक बनने लगती है। जिससे पुरूष उसके साथ शारीरिक मानसिक, आर्थिक, शोषण करने लगता है, जिससे सशक्तिकरण में बाधा उत्पन्न होती है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र **"षिक्षा और सषक्तिकरण ग्रामीण महिलाओं के सन्दर्भ में चित्रकूट धाम मण्डल बाँदा है–प्रतीकात्मक अध्ययन"**

अध्ययन– अध्ययन क्षेत्र में गणना वर्ष 2011 के अनुसार मण्डल में कुल परिवारों की संख्या 851475 है, जिसमें 4771350 जनसंख्या निवास करती है, जिसमें 4004034 ग्रामीण जनसंख्या है, अर्थात मण्डल की 83% जनसंख्या ग्रामीण है। जिसमें ग्रामीण और नगरीय महिला अन्तर 83.80% महिला ग्रामीण है, जो ग्रामीण महिला दषकीय वृद्धि दर 15.22 जबकि शहरी महिला वृद्धि दर 16.24 है। मण्डल में महिला साक्षरता 53.95 वर्ष 2001 के अनुसार मण्डल में स्नातक साक्षर महिला 15864, हायर सेकेन्ड्री 36674, इण्टर 23416, गैर तकनीकि डिप्लोमा 160 तथा तकनीकि डिप्लोमा 209 महिलाएं षिक्षित हैं। मण्डल में स्नातक महिला–पुरूष अन्तर 04.89% हायर सेकेन्ड्री में 03.58% इण्टरमीडिएट 03.88% गैर तकनीकी डिप्लोमा 01.33% तथा तकनीकी डिप्लोमा में 05.72% है।

उपरोक्त व्याख्या मण्डल में महिला षिक्षा एवं ग्रामीण महिला की षिक्षा सषक्तिकरण को व्यक्त करता है। अध्ययन क्षेत्र में लिंग भेद अन्तर दिख रहा है, जिससे पुरूष की अपेक्षा महिला साक्षरता का अन्तर काफी कम है। जो ग्रामीण महिला सषक्तिकरण में बाधा उत्पन्न कर रही है।

ग्रामीण महिला की गिरती षिक्षा–अध्ययन क्षेत्र चित्रकूट धाम मण्डल एक ग्रामीण परिवेष का मण्डल है, जहॉ 83% जनसंख्या ग्रामीण है। वैसे तो भारत संसार का दूसरा सबसे बड़ा शैक्षिक प्रणाली वाला देष है, फिर भी अध्ययन क्षेत्र में महिला साक्षरता कम है, अध्ययन क्षेत्र महिला साक्षरता कम होने के और भी अनेक कारण जिनमें प्रमुख कारण निम्न हैं–

1. ग्रामीण महिलाओं की विद्यालय तक पहुँच में बाधा।
2. सामाजिक कुरीतियाँ।
3. गृह कार्यों में अधिक समय देना।
4. आर्थिक तंगी।
5. ग्रामीण महिला का कृषि कार्य पर बढ़ता दबाव।
6. पुरुष षिक्षा की प्राथमिकता।
7. लिंग भेद का अंतर समझना।

आदि के कारणों से ग्रामीण महिलाएँ विद्यालय तक नहीं पहुँच पातीं।

षिक्षा सषक्तिकरण

1. लिंग विषमताओं को दूर कर महिलाओं को षिक्षा ग्रहण करने की आजादी।
2. गृह कार्यों से मुक्ती।
3. समाजिक कुरीतियों में परिर्वतन।
4. महिला षिक्षित, घर षिक्षित की भावना पैदा करना

आदि कार्यो के सरस्ता से उपयोग करने पर ग्रामीण महिला सषक्तिकरण को सम्भव किया जा सकता है।

निष्कर्ष–प्रस्तुत शोध प्रपत्र के अध्ययन एवं बिन्दुओं से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण होने के कारण यहाँ की ग्रामीण लड़कियों को षिक्षा प्राप्त करने में काफी कठिनाई होती हैं अध्ययन क्षेत्र में

Correspondence:
उमा चतुर्वेदी
षिक्षा संकाय, सीताराम समर्पण महाविद्यालय,नरैनी बॉदा

अधिकांषतः 05 से 12 वर्ष आयु तक की लडकियाँ ही षिक्षा ग्रहण कर पाती है, क्योंकि लड़कियों की उम्र बढ़ जाने के बाद उनके परिजन अपनी लडकियों को दूर पढ़ाने के लिए नहीं भेजते है जिससे लड़कियों की षिक्षा बीच में ही बन्द हो जाती है, जिससे उनका सर्वांगीण विकास में बाधा उत्पन्न होती है, और ग्रामीण महिला सषक्तिकरण में बाधक सिद्ध होती है। अध्ययन क्षेत्र में बेरोजगारी होने के कारण परिवारों की आर्थिक स्थिति दयनीय है जो ग्रामीण महिलाओं की षिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है। हालांकि वर्तमान परिप्रेक्ष में इन बाधाओं को तोड कर ग्रामीण लडकियाँ षिक्षा ग्रहण करने में आगे बढ़ रही हैं जो सन्तोष जनक नहीं है अर्थात देष के अन्य प्रदेष के क्षेत्रों से निम्न है। समाज में व्याप्त महिला षिक्षा के स्तर को अभी और ऊंचा उठाना होगा तभी हम महिला सषक्तिकरण को सार्थक कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका
2. योजना मासिक पत्रिका
3. दैनिक समाचार पत्र
4. सोषल फोकस, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, औरैया (उत्तर प्रदेष)
5. "दी इन्क्रेडबल" यू पी मासिक पत्रिका लखनऊ (उत्तर प्रदेष)